# उधार जो अपना हो जाता है...

रमाकान्त अग्निहोत्री

**हिन्दी को मणिपुरी से क्या परेशानी हो सकती है? बैंगन को मणिपुरी में खामेन कहते हैं।**

नए-नए शब्द बनाना बहुत आसान काम है। चलो, हिन्दी में बनाकर देखते हैं।

**गाच, उ-पाम्बी, कथीरी, खामेन**

ये तो हिन्दी के शब्द हैं नहीं, यही कहोगे ना! हाँ, है तो नहीं पर बन सकते हैं। वैसे भी कोई सुबह नाश्ता करने के बाद यह तो नहीं सोचता कि चलो अब कुछ शब्द बनाते हैं। बहुत मज़ा आएगा। ऐसा तो शायद कोई नहीं सोचता होगा कि आज कविता का मूड नहीं, तो चलो आज कुछ नए शब्द हो जाएँ। हाँ, बच्चे ज़रूर नए-नए शब्द बनाते रहते हैं। पर दो-तीन साल की उम्र के बाद सब बन्द। कवि भी, खासकर बच्चों के लिए कविता लिखनेवाले, नए-नए शब्द बनाते हैं। आम लोग नहीं। लेकिन हम सब – बच्चे, जवान, बूढ़े – स्वाभाविक रूप से हर वक्त नए वाक्य बोलते-समझते रहते हैं। भाषा की यह एक बड़ी खूबी है। थोड़े से नियम, काफी सारे शब्द, पर असंख्य वाक्य। अखबार पढ़कर देखिए – हर वाक्य नया पर शायद पूरे अखबार में एक भी शब्द नया नहीं। बात भी ठीक है आखिर क्यों इस छोटे-से दिमाग में लाखों शब्द भरें। याद रखने पड़ते हैं भई। वैसे ही हर व्यक्ति के दिमाग में लगभग पचास हज़ार शब्द तो रहते ही हैं।

यह तो सम्भव है कि हिन्दी बोलने वाले कुछ लोग कोलकाता होकर आएँ और पेड़ के लिए "गाच" शब्द का भी प्रयोग करने लगे। और पेड़, ट्री, तरु, दरख्त में गाच भी जुड़ जाए। जब मुफ्त हाथ आए तो बुरा क्या है! मणिपुरी में पेड़ को "उ-पाम्बी" कहते हैं। वह भी हिन्दी का शब्द बन सकता है। जब हिन्दी को फारसी, अरबी, तुर्की, अँग्रेज़ी आदि से कोई परहेज़ नहीं तो मणिपुरी से क्या परेशानी हो सकती है? बैंगन को तमिल में "कथीरी" और मणिपुरी में "खामेन" कहते हैं। मतलब यह कि जब कभी ज़रूरत पड़ती है तो हम नई-पुरानी चीज़ों के लिए अन्य भाषाओं से शब्द उधार ले लेते हैं। शब्द उधार देने से कोई भाषा छोटी नहीं हो जाती है और उधार लेनेवाली भाषा को कुछ वापिस भी नहीं करना पड़ता।

एक तरीका और है। पहले से जो शब्द हैं उन्हीं के अर्थों में हेरफेर कर लो। चटनी को ही ले लो। हर नए तरह की चटनी का नया नाम रख सकते थे हम लोग। लेकिन हर तरह की चटनी बस चटनी। अँग्रेज़ भी समझदार निकले। "चटनी" को ही चुरा लिया हिन्दी से। कम्प्युटर की दुनिया को ही ले लो, सभी शब्द पुराने पर मायने सब नए – माउस, कीबोर्ड, मॉनीटर, फाइल, ओपन, सेव..... सभी।

सस्ते में छुटकारा। या तो चुपचाप उधार ले लो या पुराने शब्दों को नए अर्थ दे दो।

हम लोग भाषा के मामले में काफी समझदारी से काम लेते हैं। यह बात हमें समझ आ गई है कि नए-नए वाक्य बनाने में कोई परेशानी नहीं। हम नित हज़ारों नए वाक्य बोलते हैं, समझते हैं, पढ़ते हैं और लिखते हैं। कोई समस्या नहीं। कोई बोझ नहीं दिमाग पर.....।

पर, शब्द तो याद रखने पड़ते हैं। हमारे पास नए-नए शब्द बनाने के काफी समृद्ध ढाँचे हैं फिर भी जाने क्यों हम उनका इस्तेमाल काफी कंजूसी से करते हैं!